RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

भारतीय इतिहास एवं पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 राकेश रंजन सिन्हा

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
इतिहास विभाग, कुँवर सिंह महाविद्यालय,
लहेरियासराय, दरभंगा।

आज के इस वैज्ञानिक एवं अनुसंधानपरक युग में विज्ञान ने भी इस सत्य को स्वीकार कर लिया है कि प्रकृ ति के साथ संतुलन स्थापित करके ही मानव अपनी विकास यात्रा को पूरा कर सकता है। आज यह बात भली–भाँति सिद्ध हो चुकी है कि पर्यावरण असंतुलन एवं प्रकृति से छेड़–छाड़ करने पर मानव विभिन्न रोगों एवं प्रकोपों का शिकार हो सकता है। प्राचीन भारतीय इतिहास इस तथ्य को बहुत पहले ही भली–भाँति समझ लिया था कि प्रकृति रूपी पालना के गोद में ही रहकर मानव स्वस्थ्य एवं निरोग रह सकता है। भले ही इस सोच के पीछे धार्मिकता का पुट अधिक रहा हो परंतु इसके पीछे कहीं न कही कोई वैज्ञानिक सोच भी अवश्य रही होगी और आज यह शोध का विषय है।

आज पूरी दुनिया पर्यावरण प्रदुषण के भय से त्रस्त है। यह चिंता नई नहीं है, पहले भी थी। तब हमारे मुनियों ने इस विषय पर भी चिन्तन किया था और इसके समाधान भी पेश किये थे। उन्होंने पर्यावरण के हानिकारक प्रत्येक काम को आसुरी प्रवृति और हितकर कार्य को दैवी प्रवृति माना है। कुदरत का ऐसा प्रावधान है कि वृक्ष–वनस्पतिया आदि पर्यावरण का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। वृक्ष कार्बन–डाय–आक्साइड आदि हानिकारक गैसों को शोषित कर लेते है, और सब प्राणियों के लिए जीवन–दायक प्राण–वायु आक्सीजन उपलब्ध कराते ह। इसके अतिरिक्त वर्षा कराने में, मरूस्थल पर नियंत्रण रखने में और नदियों की बाढ़ की रोकथाम में भी सहायता करती है। इसलिए हमारे वेद और पुराणों में ''प्राणो वै वनस्पति'' की घोषणा की गई है, और मत्स्य पुराण में वृक्षों को अपने पुत्रों के समान लालन–पालन की सीख देकर पर्यावरण संतुलन पर बल दिया गया है। वैदिककाल में प्राकृतिक शक्तियों में देव स्वरूप की अवधारणा मात्र यह इंगित करती है कि हम इनकी रक्षा करें, इनसे अनुराग रखे और स्वस्थ्य संतुलित जीवन–यापन करते हुए पर्यावरण की यथा शक्ति रक्षा करें।

वैज्ञानिक अध्ययन से साफ है कि प्रदुषित जल द्वारा टेस्टोस्टेरान और एंड्रोजन जैसे हर्मोनो पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव हम मानव में जहाँ प्रजनन संबंधी समस्याए पैदा करती है वही वह अन्य रोगों को भी जन्म देती है। आज जिन नदियों के जल को हम प्रदुषित कर रहे है, उन्हीं नदियों यथा गंगा, सिन्धु, सतलज, सरस्वती आदि नदियों की स्तुति ऋग्वेद में की गई है, और हमारे पवित्र सरिताए और सरोबर के तटों पर आस्था केन्द्र काशी, मथुरा, हरीद्वार आदि तीर्थ स्थापित है। छठ पर्व में अर्ध्य के लिए जलस्त्रोत की महत्ता सर्वविदित है। यह पर्व लगातार विलुप्त होते तालाब, आहार, पोखर और नदियों को जीवन दान देने के लिये प्रेरित करता है। यह प्रकृति संतुलन की दीर्घकालिक योजना को जीवंत बनाये रखने का इशारा है।

आज विज्ञान ने भी इस सत्य को स्वीकार कर लिया है कि हाइड्रोजन और हीलियम के नाभकीय संलयन के कारण सूर्य जहाँ ऊर्जा का अक्षय एवं वैकल्पिक स्त्रोत है, वही सौर ऊर्जा पर्यावरण के लिए हितकारी भी है। सूर्य विटामिन डी0 और अनेक चर्म रोगों से मुक्ति पाने का भी प्राकृतिक स्त्रोत है। हम देखते है कि ऋग्वेद में वर्णित देवताओं में सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान है। गायत्री मंत्र जो ऋग्वेद से लिया गया है वह सूर्य देवता को ही समर्पित है। ब्रह्मपुराण के 28 वे अध्याय में सूर्य पूजा का वर्णन है। छठ पर्व में भी हम मुख्य रूप से सूर्य को ही अर्ध्य देकर उनकी पूजा करते है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

भारतीय इतिहास प्रारंभ से ही मौर्यवंश के महान सम्राट अशोक के ''जियो और जीने दो'' के सिद्धांत पर आधारित है। सह–अस्तित्व का यह सिद्धांत ही हम भारतीयों को प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। हमारे ऋषि जानते थे कि पृथ्वी का आधार जल और जंगल हैं, इसलिए उन्होंने पृथ्वी की रक्षा के लिए वृक्ष और जल को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा है कि ''वृक्षाद् वर्षति पर्जन्य् पर्जन्यादन्न सम्भवः अर्थात वृक्ष जल है, जल अन्न है और अन्न जीवन है। हिन्दू जीवन के चार महत्वपूर्ण आश्रमों में से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्यास का सीधा संबंध वनों से ही है।

हिन्दू धर्म के प्रत्येक देवी–देवता भी पशु–पक्षी और पेड़–पौधों से लेकर पकृति के विभिन्न अवयवों के संरक्षण का संदेश देते है। हिन्दू धर्म में गाय, कुत्ता, चूहा, हाथी, शेर और यहाँ तक की विषधर नागराज को भी पूजनीय बताया गया है। इस सब के पीछे जीव संरक्षण का संदेश है। देवो के देव महादेव तो बिल्वपत्र और धतुरे से ही प्रसन्न हाते है। यदि कोई शिव भक्त है तो उसे बिल्वपत्र और धतुरे के पेड़–पौधे की रक्षा करनी ही पड़ेगी। वट–सावित्री और अक्षर–नवमी का पर्व मनाना है तो वट–वृक्ष और आंवला के वृक्ष को बचाना ही पड़ेगा। सरस्वती को पीले फूल पसंद है। धन–संपदा की देवी लक्ष्मी को कमल के फूलों से प्रसन्न किया जा सकता है। गणेश दूर्वा से ही प्रसन्न हो जाते है।

देश के प्रमुख पर्वत देवताओं के निवास स्थान माने गये हैं, अगर पर्वत देवताओं के वास स्थान नही होते, तो कब के खनन् माफिया उन्हें उखाड़ चुके होते।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महात्मा बुद्ध ने अपनी मध्यमप्रतिपदा अर्थात मध्यम मार्ग के द्वारा ही मानव के सतत विकास को आसान बना दिया था। वास्तव में यह मार्ग अतिवादी विचारधारा का निषेध करता है। आज प्राकृतिक आपदा का मूल कारण यह है कि मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर लिया है, जिससे प्राकृतिक असन्तुलन की स्थिति बन गई है। यहाँ पर हम महात्मा बुद्ध के बताए गए मध्यम मार्ग पर चल कर एवं प्राकृतिक संसाधनों में संतुलन स्थापित करते हुए पर्यावरण असंतुलन को कम कर मानवीय विकास को सुनिश्चित कर सकते है।

इसी तरह रामचरितमानस एवं गीता में भी पर्यावरण संरक्षण का संदेश है। रामचरितमानस में भगवान शिव का रूप पर्यावरण चेतना के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्व रखता है।

पर्यावरण संरक्षण को महत्व देते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी का मानना है कि वृक्ष से फल तोड़ कर खाना तो उचित है, किन्तु वृक्ष को काटना अपराध हैं,

रीक्षि खींक्षि गुरूदेव सिख सखा सुसाहित साधु।
तोरि खाहु फल होइ भला तरू काटे अपराध।।

आजकल वृहद वृक्षारोपण का कार्य व्यापक रूप से चलाया जा रहा है, जिसका उद्देश्य जन–सामान्य को वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करना है। यदि हम रामचरित मानस का अध्ययन करें तो पाते है कि जन–साधारण को वृक्षारोपण हेतु प्रेरित करने का कार्य तुलसीदास जी आज से बहुत पहले ही प्रारंभ कर चुके थे। रामचन्द्र जी के विवाह के उपरांत जब बारात लौट कर आती ह, तब अयोध्या नगरी में विविध वृक्षों का रोपण किया जाता है,

सकल पूगफल कदलि रसाला।
रोपे बकुल कदम्ब तमाला।।

गोस्वामी जी द्वारा वृक्षारोपण को एक स्वाभाविक कार्य बताया गया है। हर व्यक्ति को स्वप्रेरणा से ही जहाँ भी जैसे भी संभव हो, वृक्षारोपण कार्य करते रहना चाहिए। अपने वन प्रवास के दिनों में सीता एवं लक्ष्मण जी द्वारा विस्तृत वृक्षारोपण किया गया,

तुलसी तरूवर विविध सुहाए।
कहुँ–कहुँ सिया, कहुँ लखन लगाए।।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

भगवान शिव का रूप पर्यावरण चेतना के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक महत्व रखता है, क्योंकि शिव के वेश में प्रकृ ति क संरक्षण का विज्ञान समाहित है। भगवान शिव के सिर पर सबसे ऊपर गंगा है। कहा जाता है कि जल–ही जीवन है। आधुनिक युग में नये ग्रहों में जीवन की खोज में सर्वप्रथम जल की ही खोज की जाती है, यदि जल मिला तभी जीवन संभव है अर्थात जल को सर्वोपरि महत्व दिया जाता ह। इसलिए शिवजी ने गंगा को स्वच्छ जल का प्रतीक मानकर सिर पर धारण किया है, और प्राथमिकता दी है, और हमें भी यह जल की महत्ता की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

श्रृंगार के दूसरे क्रम में माथे पर चंद्रमा स्थित है। पर्यावरण की दृष्टि से आज भी चंद्रमा सौरमंडल में ताप का सबसे बड़ा धारक है, जो उष्मा ग्रहण कर रात्रि में शीतलता देता है। हरित पादप भी पृथ्वी पर उष्मा ग्रहण कर वर्षा के रूप में हमें शीतलता प्रदान करते हैं। इस प्रकार गंगा और चंद्रमा का भगवान शिव के सिर पर एक साथ होना नवीकरण एवं पुनः स्थापित हरित ऊर्जा के अविनाशी स्त्रोत की संकेत करता है।

श्रृंगार का तीसर आभूषण है कर्ण–कुण्डल, जिसमें सर्प को स्थान मिला है जिसका अर्थ है कि विषैले तत्व जल, स्थल, तथा वायु मे सम्मिलित होकर उन्हें प्रदूषित नही कर पायेंगे।

शिवजी का कण्ठ नीला है, प्रसंग है कि समुंद्र मंथन के समय शिवजी ने देवताओं की रक्षा के लिए विषपान कर लिया था, और उसे गले में ही रखा, जिसके प्रभाव से कण्ठ नीला पर गया। यह संकेत देता है कि विष को कभी भी वातावरण में स्वतंत्र नही छोड़ना चाहिए, बल्कि उसे सुरक्षित कवच के अंदर रखना उचित है जिससे कि वह जैविक तंत्र के भोज्य पदार्थ या पेय पदार्थ के साथ न मिल जाए तथा उसे किसी भी स्थिति में जलधारा में मिलने से बचाया जाए, जिससे किसी भी प्राणी को विष का प्रभाव न हो सकें। जबकिं आज हम जैव चिकित्सकीय अवशेषों को इसी तरह जल और थल में फेंक देते है, जिससे पूरा पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है।

शिवजी के हाथ में त्रिशुल और डमरू हैं, इस अस्त्र और वाद्य यंत्र से किसी भी तरह का रसायनिक और ध्वनि प्रदूषण नही होता है।

शिवजी ने कमर में बाघंम्बर लपेटा है जो यह बताता है कि बांध की सुरक्षा की जानी चाहिए जो जैव संरक्षण का अच्छा उदाहरण है।

शिवजी के शरीर पर राखरूपी श्रृंगार यह संदेश देता है कि यदि पर्यावरण सुरक्षित नही रहा तो सब कुछ राख में मिल जायेगा।

गीता में भी भगवान कृष्ण ने पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। वृक्षों में अपने को पीपल कह कर, वे उसकी ऑक्सीजन क्षमता का परिचय देते है। आज कृषि वैज्ञानिक फसलों की समृद्धि और पशु वैज्ञानिक स्तनपायी पशु में दूध की वृद्धि के लिए म्यूजिक थ्रेरेपी का सहारा लेते है, जबकि भगवान कृष्ण बचपन से ही कदम्ब पेड़ के नीचे बांसूरी की मधुर धुन बजाते रहे है। कृषि प्रधान देश में गो–वंश द्वारा पर्यावरण शुद्ध करने के महत्व को उन्होंने ही बताया। इन्द्र की पूजा बंद करवा कर गोवर्धन पर्वत की पूजा की शुरूआत कर उन्होंने जन सामान्य को मिट्टी, पर्वत, वृक्ष एवं वनस्पति का आदर करना सिखाया। जल प्रदूषण को दूर करने में भी श्री कृष्ण ने अहम् भूमिका निभाई है। कालीदह पर काली नाग को नथने की कला जल प्रदूषण से ही जुड़ी है। यमुना नदी के दूषित जल को जहरीले सांप से मुक्त कराकर स्वच्छ जल में बदला।

वैश्विक पर्यावरण असंतुलन के साथ–साथ आज हमारा समाजिक पर्यावरण भी असंतुलित हो गया है। इसका मूल कारण हमारी भौतिकवादी संस्कृति है। समाजिक पर्यावरण के संतुलन का भी प्रयास हमारे ऋषि–मुनियों ने किया है। आज हमारा सामाजिक पर्यावरण भौतिकवादी संस्कृति के प्रभाव के कारण तनाव और मानसिक अवसाद से घिरा हुआ है। मनुष्य में सिर्फ पैसा प्राप्त करने की आकंक्षा रह गयी है। मनुष्य मशीन जैसा जड़वत हो गया है। यदि हम भारतीय इतिहास के मध्यकालीन संत कबीर के इस दोहे पर ध्यान दें तो काफी हद तक मानव तनाव और मानसिक अवसाद से दूर हो सकता है,

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)

साई इतना दीजिये, जा मे कुटुम्ब समाय।
मै भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भूखा जाय।।

आज विज्ञान के पास भी तनाव या अवसाद से लड़ने का कोई कारगर उपाय नही है जबकि वैदिककालीन भारतीय इतिहास में संयुक्त परिवार प्रथा और प्रकृति के निकट रह कर मानव अपना तनाव और अवसाद दूर कर सकता था।

इस तरह हम देखते है कि भारतीय इतिहास में वैश्विक पर्यावरण संतुलन के साथ–साथ सामाजिक पर्यावरण संतुलन के भी उपाय बताए गये है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उन उपायों को अपने आचरण में उतारे।श

संदर्भ ग्रंथः–

1. अंजलि श्रीवास्तव – पर्यावरण संरक्षण, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. किरण कुमारी गुप्त – हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रकाशन, प्रयाग, 1959
3. विद्या निवास मिश्र – रामायण का काव्यमर्म, प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2001
4. विश्वनाथ त्रिपाठी – लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण 1974
5. डॉ0 रामनाथ शर्मा एवं राजेन्द्र कुमार शर्मा – भारतीय समाज, संस्थाएँ और संस्कृति, एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली।
6. प्रोफेसर एस.पी. गौतम – बन्दे विशुद्धविज्ञान रामचरित मानस, भैया प्रिंटर्स, इंदौर।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)